

# डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 5, यूहन्ना 2:13-3:36

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 5 है, यरूशलेम में यीशु की प्रारंभिक सेवकाई। यूहन्ना 2:13-3:36.

जॉन के सुसमाचार पर हमारे पांचवें वीडियो में आपका स्वागत है। हमने पुस्तक के परिचय और पहले कुछ अध्यायों को देखा है। तो अब हम गलील के काना में यीशु के पहले चमत्कार से लेकर यरूशलेम में उसकी पहली यात्रा तक का अनुसरण कर रहे हैं।

इसलिए, हम पहले कथा प्रवाह को देखेंगे और फिर इस अध्याय में आने वाले कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर गौर करेंगे। हम निकुदेमुस की कहानी के माध्यम से यूहन्ना 2, पद 12 को देखना शुरू करते हैं। हम देख रहे हैं कि यीशु गलील और यहूदिया के काना के बीच परिवर्तन कर रहे हैं।

तो, हमें बताया गया है कि गलील के काना में चमत्कार करने के बाद, पद 12, वह अपनी माँ और भाइयों के साथ कफरनहूम चला गया, और वहाँ कुछ दिनों तक रहा। परन्तु जब पद 13 में, फसह का समय लगभग आ गया, तो वे यरूशलेम को चले गए। पहली चीज़ जो वहाँ घटित हुई, उसे हम बेहतर शब्द के अभाव में मंदिर की घटना कह सकते हैं, जहाँ यीशु ने उन लोगों को बाहर निकाल दिया जो मंदिर में वित्तीय लेनदेन कर रहे थे।

यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि ऐसा करना क्यों आवश्यक था। निश्चित रूप से वित्तीय लेनदेन की आवश्यकता थी, विदेशी आगंतुकों से पैसे बदलने की आवश्यकता थी, और बलि के जानवरों को भी खरीदा जाना था। तो, वहाँ जो चल रहा था वह एक आवश्यक सेवा थी, या तो इसका स्थान या जिस तरीके से इसे बेईमानी से किया गया वह समस्या थी, और मुझे लगता है कि हम इसके संकेत यहाँ और वहाँ कथा में पा सकते हैं यह क्या था इसके बारे में।

यीशु को नाम लेते और लात मारते हुए देखना एक बहुत ही दिलचस्प अनुभव रहा होगा, जैसा कि यह था। इसलिये उसने उन सब लोगों को जो वहाँ बलि के पशुओं की देखभाल कर रहे थे, बाहर निकाल दिया, और सर्पाओं के सिक्के बिखेर दिए, और उनकी मेजें उलट दीं। कबूतर बेचने वालों से उसने कहा, यहाँ से चले जाओ, मेरे पिता के घर को बाज़ार बनाना बंद करो।

इसने उनके शिष्यों को पुराने नियम के उस अंश के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया, आपके घर के लिए उत्साह मुझे खा जाएगा, कुछ क्षणों के बाद उस अंश पर और अधिक। तो, मंदिर में हुई इस घटना के बाद जो प्रतिक्रिया दी गई, उससे यीशु से सवाल पूछा गया, जो जॉन में एक महत्वपूर्ण शब्द था, है ना? यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि तू हमें इस सब पर अपना अधिकार सिद्ध करने के लिये कौन सा चिन्ह दिखा सकता है? दूसरे शब्दों में, आपको यहाँ हमारे मंदिर में इस प्रकार का कृत्य करने का अधिकार किसने दिया? यीशु ने उन्हें जो उत्तर दिया वह

बड़ा अस्पष्ट वाक्य निकला, इस मन्दिर को नष्ट कर दो, मैं इसे तीन दिन में फिर खड़ा कर दूँगा। खैर, जाहिर है, मंदिर के निर्माण में काफी समय लगा।

हेरोदेस इसका पुनर्निर्माण कर रहा था, इसका नवीनीकरण कर रहा था, इसका विस्तार कर रहा था, इसके मंच को चौड़ा कर रहा था, और इसकी इमारतों को सुंदर बना रहा था। वे यहां श्लोक 20 में कहते हैं, इस बिंदु पर 46 वर्ष चल रहे हैं, और उन्होंने कहा, आप इसे तीन दिनों में नष्ट कर देंगे। जाहिर है, यीशु जानबूझकर वहां अपारदर्शी थे, क्योंकि श्लोक 21 से 22 में हमें जो संपादकीय टिप्पणी मिलती है, वह इंगित करती है कि वह मंदिर के बारे में बात कर रहे थे, जो उनका शरीर था।

और जब वह मरे हुआओं में से जी उठा, तब उसके चेलों को वह बातें स्मरण आईं, जो उस ने कही थीं, और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस की कही हुई बातों पर विश्वास किया। तो यह कथन, जैसा कि श्लोक 19 में है, छिपा हुआ है, मैं इसे तीन दिनों में फिर से उठाऊंगा, उनके लिए एक भविष्यवाणी शब्द बनकर समाप्त होता है। तो जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है, यीशु द्वारा मंदिर को साफ़ करने और नेताओं के साथ उनकी बातचीत की कहानी असंतोषजनक होने के बाद, हमारे पास अध्याय दो के अंत में एक बहुत ही दिलचस्प बात कही गई है, जो हमें निकोडेमस घटना को समझने के लिए तैयार करती है, जो आगे आ रहा है।

जब वह फसह के पर्व के समय यरूशलेम में था, तो बहुत से लोगों ने उसके दिखाए हुए चिन्हों को देखा और उसके नाम पर विश्वास किया। बेशक, जॉन हमें व्यक्तिगत संकेतों के बारे में कुछ नहीं बताता है। आयत 18 में संकेतों के लिए अनुरोध था, और आयत 23 कहती है कि यीशु संकेत कर रहे थे।

बहुत लोगों ने उन चिन्हों को देखा, और बहुत लोगों ने विश्वास किया। लेकिन उस कथन से जो निष्कर्ष निकलता है वह हमारे लिए काफी भ्रमित करने वाला है। यह क्रिया पिस्तूओ पर एक नाटक के साथ ग्रीक में एक छोटा सा यमक है।

बहुत से लोगों ने उन चिन्हों को देखा जो वह प्रदर्शित कर रहा था, और तब उसने उसके नाम पर विश्वास किया, परन्तु यीशु स्वयं को उनके अधीन नहीं कर रहा था। ऐसा कहा जा सकता है कि वह उन पर अपना विश्वास नहीं रख रहा था, क्योंकि वह सभी लोगों को जानता था। उसे मानवजाति के बारे में गवाही की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि प्रत्येक व्यक्ति में क्या है।

तो यहां हमारे पास जॉन में पहला संकेत है कि विश्वास, जो संकेतों को देखने पर आधारित है, शायद किसी तरह से संदिग्ध है, या अपर्याप्त है, या जरूरी नहीं कि हम एक पूर्ण, परिपक्व, बचाने वाले विश्वास के रूप में क्या देखना चाहते हैं। और फिर मुझे लगता है कि इससे हमें जानकारी मिलती है जो हमें यह समझने में मदद करती है कि अध्याय 3 में निकोडेमस कहां से आ रहा है। इसलिए, जब हम जॉन अध्याय 3 को देखते हैं, तो हम इस आदमी निकोडेमस को देखते हैं, जिसे स्पष्ट रूप से यहूदियों के एक शासक शिक्षक के रूप में वर्णित किया गया है। जो प्रसिद्ध था, समुदाय में प्रतिष्ठित और रुतबा वाला व्यक्ति था, जिसके बारे में यीशु ने बाद में अध्याय 3 में कहा,

और क्या यह श्लोक 12 है? नहीं, पद 10, आप इस्राएल के शिक्षक हैं, और आप नहीं समझते कि मैं क्या कह रहा हूँ। तो, निकुदेमुस, जाहिर तौर पर एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति था, लेकिन जब यीशु को समझने की बात आई तो वह अभी भी अनभिज्ञ था।

इसलिए, जब हम यीशु और निकुदेमुस की कथा को देखते हैं, तो निकुदेमुस पहले संकेत करता है कि उसका मानना है कि यीशु को ईश्वर की ओर से आया एक शिक्षक होना चाहिए, क्योंकि उसके संकेत अध्याय के अंत में निकुदेमुस को उन लोगों से जोड़ते प्रतीत होते हैं जो यीशु में विश्वास करते थे। 2. फिर वह यीशु को यह प्रशंसा देता है, और मुझे यकीन है कि यीशु द्वारा आपको धन्यवाद नहीं कहने, या मैं आपकी सराहना करता हूँ, या आपके आत्मविश्वास के लिए धन्यवाद नहीं कहने से वह काफी पीछे है। यीशु बस इतना कहते हैं, जब तक आप नया जन्म नहीं लेते तब तक आप परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकते। तो, हमारे पास यीशु और निकुदेमुस के बीच बार-बार होने वाले आदान-प्रदान हैं, जिससे काफी हद तक आपसी नाराजगी पैदा होती है, क्योंकि वे वास्तव में एक-दूसरे को बिल्कुल भी अच्छी तरह से नहीं समझते हैं, और हम इसे थोड़ा और विस्तार से देखेंगे। .

तो, हमारे पास श्लोक 15 तक यीशु और निकुदेमुस के बीच की कथा है। जाहिर तौर पर उस बिंदु पर, श्लोक 16 से शुरू होकर, मैं सोच रहा हूँ कि क्या यह एक संपादकीय टिप्पणी है, बिल्कुल यीशु के सीधे शब्द नहीं। कम से कम ऐसा तो होना ही चाहिए, क्योंकि मेरे हाथ में जो एनआईवी बाइबिल है, उसमें लाल अक्षर श्लोक 15 पर रुकते हैं।

कम से कम उनकी यही व्याख्या थी। मैं इसके बारे में पहले भी सोच चुका हूँ, और यह भी सोच रहा हूँ कि क्या लाल अक्षरों को श्लोक 13 पर रुकना चाहिए, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यीशु ने संभवतः कहा होगा, जैसे मूसा ने जंगल में साँप को उठा लिया था, वैसे ही उसके पुत्र को भी ऐसा करना चाहिए। मनुष्य ऊंचे पर चढ़ाया जाए, कि जो कोई विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए। तो, इस तरह से यीशु ने निकोडेमस के साथ कथा का समापन किया, और हमें वास्तव में यह नहीं बताया गया कि क्या निकोडेमस ने यीशु से कहा, ठीक है, अब मैं समझ गया, मुझे विश्वास है, या क्या निकोडेमस अभी भी अपना सिर हिला रहा है और सोच रहा है कि क्या हो रहा है, संदेह में चले जाना, या क्या हो रहा है।

निकोडेमस अभी लटका हुआ है, लेकिन चिंता मत करो, वह अध्याय 7 में फिर से वापस आने वाला है, और हम उसे फिर से वहाँ देखेंगे, और हम उसे बाद में अध्याय 19 में तीसरी बार फिर से देखेंगे, मुझे विश्वास है। तो, श्लोक 16 में जॉन की संपादकीय टिप्पणी, संभवतः श्लोक 21 के बाद, मुझे लगता है कि निकोडेमस के साथ साक्षात्कार को समझने के लिए यह हमारे लिए व्याख्यात्मक तरीका है। हमें निकुदेमुस के साथ यीशु के साक्षात्कार से जो लेना है वह छंद 16 से 21 है, कि भगवान ने दुनिया से प्यार किया, उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, यीशु दुनिया में निंदा करने के लिए नहीं आ रहे थे दुनिया, लेकिन दुनिया को बचाने के लिए।

जो लोग विश्वास नहीं करते हैं, वे पहले ही निंदा कर चुके हैं, दुर्भाग्य से, क्योंकि उन्होंने विश्वास नहीं किया है कि प्रकाश यीशु के माध्यम से दुनिया में आया है, और निकोडेमस, जो किसी भी

कारण से रात में यीशु के पास आता है, एक ऐसा व्यक्ति है जो अभी भी स्पष्ट रूप से अंधेरे में है इस बिंदु पर, और इसलिए हमारे पास अध्याय के अंत में प्रकाश और अंधेरे की यह रूपक भाषा है। जो कोई सत्य पर चलता है वह प्रकाश में आता है, ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके कि उन्होंने जो किया है वह भगवान की दृष्टि में किया है, पद 21। जॉन की तरह एक पुस्तक में, हमें पद 21 लेना होगा, मुझे लगता है, में पद 2 में जो कहा गया है, उसका प्रकाश, कि निकुदेमुस रात में यीशु के पास आया, और निकुदेमुस, क्षमा करें, पद 21 एक प्रकार का संकेत है कि निकुदेमुस जैसे व्यक्ति को अंधकार से बाहर आने और प्रकाश में आने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना पर फिर से विचार करते हुए कि यह मूसा और यीशु के बारे में क्या कहता है, निकोडेमस मूसा का अनुयायी था, मूसा का एक बहुत ही प्रमुख अनुयायी। अब उसे ऐसी स्थिति में रखा गया है जहां उसे यह समझने की जरूरत है कि जैसे तोरा मूसा द्वारा आया था, वैसे ही अनुग्रह और सच्चाई अंततः यीशु के माध्यम से आई थी। यह देखना अभी बाकी है कि निकोडेमस इसे पूरी तरह से समझ पाएगा या नहीं, हालाँकि हम निकोडेमस के बारे में कुछ बेहतर चीजें देखते हैं क्योंकि हम इस सुसमाचार के बाकी हिस्सों को पूरी तरह से देखते हैं।

तो, आइए अब एक क्षण लें और जॉन 3 में बताए गए तरीके की तुलना करें, कि यीशु और जॉन के मंत्रालयों को निर्धारित किया गया है। यह बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि हम पहले ही अध्याय 1 में पढ़ चुके हैं कि जॉन ने कहा कि वह प्रकाश नहीं था, लेकिन वह प्रकाश के बारे में गवाही देने आया था। तो, अध्याय के श्लोक 22 से 36 तक, अब मैं इसे हमारे लिए एक बार और चलाने जा रहा हूँ।

सलीम के पास एनोन में बपतिस्मा चल रहा था, ऐसे स्थान जिन्हें हम काफी हद तक स्पष्ट करने का प्रयास करने में समय नहीं लेंगे, और जॉन के शिष्यों, श्लोक 25, और कुछ यहूदियों के बीच औपचारिक धुलाई के मामले पर बहस चल रही थी। और जॉन का संदर्भ दिया गया था कि यीशु बहुत से लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, और लगभग यह आभास देने के लिए कि उसका चर्च आपकी तुलना में तेजी से बढ़ रहा है, तो आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? इस पर जॉन ने उत्तर दिया, श्लोक 27 में, एक व्यक्ति केवल वही प्राप्त कर सकता है जो उसे स्वर्ग से दिया गया है। आप जानते हैं कि मैंने कहा था कि मैं मसीहा नहीं हूँ, मुझे तो बस उससे पहले भेजा गया है।

और वह अपनी तुलना दूल्हे से नहीं, बल्कि दूल्हे के दोस्त से करता है, जिसे दूल्हे को उसकी शादी का आनंद लेने में मदद करने से खुशी मिलती है। तो, जॉन कहते हैं, वह, यीशु, को बड़ा होना चाहिए, मुझे कम बनना चाहिए, श्लोक 30। किसी को आश्चर्य होता है कि क्या शेष अध्याय, श्लोक 31 और उसके बाद, जॉन द बैपटिस्ट के शब्द हैं, या फिर संपादकीय टिप्पणी जो स्पष्ट करती है श्लोक 21 से 30 तक क्या हो रहा है।

यदि ऐसा है, तो यह एक पैटर्न होगा जैसा कि हमने अध्याय की शुरुआत में देखा था। यदि ऐसा होता, तो जैसे 3, 1 से 15 तक यीशु और निकुदेमुस के बीच साक्षात्कार का वर्णन है, और 16 से 21 हमें उस पर संपादकीय परिप्रेक्ष्य दिखाते हैं। इसी तरह, समानांतर में, श्लोक 22 से 30 जॉन द बैपटिस्ट और इन यहूदी लोगों का साक्षात्कार होगा, और फिर श्लोक 31 और उसके बाद जॉन द इवेंजलिस्ट, उस पर पुस्तक की टिप्पणी के लेखक होंगे।

मैं इसे उसी रूप में लेता हूँ जिसे यहां देखा जाना चाहिए। तो, यदि यह मामला है, तो जॉन टिप्पणी कर रहे हैं, जॉन द इवेंजेलिस्ट, पुस्तक के लेखक, कि जो ऊपर से आता है वह सबसे ऊपर है। जो धरती का है वो धरती का है।

उसने जॉन बैपटिस्ट के रूप में जो देखा है उसकी गवाही देता है। उसकी गवाही कोई स्वीकार नहीं करता। जिसने भी इसे स्वीकार किया है उसने प्रमाणित कर दिया है कि ईश्वर सच्चा है।

इसलिए, पाठक को यह निर्णय लेने की चुनौती दी जा रही है कि क्या वे जॉन की गवाही को स्वीकार करेंगे या नहीं। जिसे परमेश्वर ने भेजा, स्पष्टतः पद 34, यीशु का संदर्भ है। वह परमेश्वर के वचन बोलता है क्योंकि परमेश्वर असीमित आत्मा देता है।

एक बहुत ही कटा हुआ बयान, और हमें आश्चर्य है कि इसके कुछ पूर्ववृत्त क्या हैं। असल में, एनआईवी यहां थोड़ा व्याख्यात्मक रहा है क्योंकि असल में पाठ बस इतना कहता है, जिसे भगवान ने भेजा है वह भगवान के शब्दों को बोलता है क्योंकि वह असीमित रूप से आत्मा देता है। एनआईवी ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि पिता बिना किसी सीमा के आत्मा देता है।

श्लोक 35, तो, पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसने सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है। प्रभु पुत्र को शाश्वत जीवन मानते हैं। जो कोई पुत्र को अस्वीकार करता है वह जीवन नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।

फिर, जिस तरह से श्लोक 35 और 36 उस बिंदु को बताते हैं, वह उस तरीके के समान है जिस तरह श्लोक 16 से 21 यीशु में विश्वास की आवश्यकता के बारे में बताते हैं। तो यदि यह मामला है, तो हमारे पास अध्याय के दो भाग हैं, अध्याय 3 श्लोक 1 से 21 तक, अध्याय 3 श्लोक 22 से 36 तक, 3 के साथ, 1 से 20 तक, 3 से मेल खाते हुए, 22 से 30 तक, और 3, 16 से 21, 3, 31 से 36 के साथ मेल खाता है। अब जब हमने अध्याय के समग्र प्रवाह को देख लिया है, तो आइए संक्षेप में फिर से देखें, उस समय यरूशलेम कैसा रहा होगा।

यीशु मन्दिर में आये हैं। हमें ठीक-ठीक पता नहीं है कि वह कैसे अंदर आया या कौन सा गेट इस तरह का था, लेकिन उसने क्षेत्र में कहीं न कहीं मनी चेंजर्स और उन सभी को उखाड़ फेंकने का अपना काम किया है। ऐसा माना जाता है कि या तो वह इसे मंदिर के बाहर की सड़कों पर कर रहा था, जहां लोग शायद दक्षिण-पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर जाते होंगे, जहां सीढ़ियां आज भी संरक्षित हैं, या शायद वे इस काम में से कुछ भी कर रहे थे। अन्यजातियों के तथाकथित दरबार में मंदिर के अहाते के अंदर, जहाँ लगभग कोई भी प्रवेश कर सकता था।

यह पाठ से उतना स्पष्ट नहीं है, कम से कम इस बिंदु पर मेरे लिए। तो, आज यरूशलेम की तस्वीर को देखते हुए, कमोबेश पश्चिम से, थोड़ा उत्तर-पश्चिम की ओर देखते हुए, मैं अनुमान लगाऊंगा। आज हमारे यहां प्रसिद्ध पश्चिमी दीवार है, हेरोदेस महान द्वारा निर्मित रिटेनिंग दीवार, जिसे आज प्रार्थना स्थल, विलाप दीवार के रूप में जाना जाता है, जहां कई पर्यटक आते हैं और कई यहूदी लोग हर दिन वहां ईश्वर से इसराइल को छुड़ाने के लिए प्रार्थना करते हैं।

यहां मंदिर का दक्षिणी भाग और मंदिर के द्वारों तक जाने वाली सीढ़ियां हैं जो वर्तमान में मंदिर के दक्षिणी छोर पर अल-अक्सा मस्जिद के नीचे हैं। शायद हम यह देख रहे होंगे कि वे कहां बेच रहे थे, जैसे बदल रहे थे और नीचे इस क्षेत्र में बलि के जानवरों को बेच रहे थे, जहां आप अभी भी देख सकते हैं, जैसा कि हम एक पल में देखेंगे, शायद सड़क के स्तर पर स्टालों के अवशेष वह रोमन काल में था। उसी क्षेत्र को दक्षिण से देखने पर, यहाँ सीढ़ियाँ होंगी जिनके बारे में हम कुछ क्षण पहले बात कर रहे थे और मंदिर के प्रवेश द्वार होंगे जो भूमिगत हो गए होंगे और अन्यजातियों के दरबार में आ गए होंगे।

यह शायद उतना सटीक पुनर्निर्माण नहीं है जितना मैंने इस क्षेत्र में देखा है, लेकिन अब हम उत्तर-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर देख रहे हैं, मुझे कहना चाहिए, दक्षिण-पश्चिम की ओर। और इसलिए, मंदिर की दक्षिणी पहुंच यहां से नीचे है और रोती हुई दीवार यहां मंदिर के परिक्षेत्र के दूसरी तरफ होगी। यह कलाकार द्वारा पवित्र स्थान और सबसे पवित्र स्थान, मंदिर का पुनर्निर्माण है।

यह अन्यजातियों का न्यायालय होगा जहां अन्य लोगों को आने की अनुमति होगी और महिलाओं का न्यायालय, पुरुषों का न्यायालय, और अंततः केवल जहां पुजारी यहां काम कर सकते थे और महायाजक वर्ष में केवल एक बार प्रायश्चित के दिन ही काम कर सकते थे। परमपवित्र स्थान में प्रवेश करो। तो, या तो इस बाहरी क्षेत्र में या शायद बाहर सड़क पर, जैसे बदलने वाले और पीड़ितों के विक्रेता जा रहे थे। यह वह तस्वीर है जो मैंने 2014 में मंदिर के दक्षिण-पश्चिमी कोने में जाते समय ली थी, आप आज भी इस प्रकार की रिटेनिंग दीवारें देख सकते हैं जो दूसरी दीवार को पकड़ने के लिए बनाई गई हैं या वे केवल दुकानों को घेरने के लिए बनाई गई हैं।

और आप अभी भी वहां चट्टान में समाई हुई राख को पत्थर में देख सकते हैं। 70 ई. में रोमनों द्वारा ऊपर से पत्थर फेंके जाने से सड़क की राख वाली लॉरियाँ टूट गईं और वह सड़क टूट गई जो आज भी यहाँ हुआ करती थी। शायद यहीं पर खरीद-बिक्री हो रही थी जिसका उल्लेख पाठ में किया गया है।

हम उस संदर्भात्मक दुनिया के बजाय पाठ के बारे में एक पाठ के रूप में सोचने के लिए वापस आते हैं जिसका वह हवाला देता है। तो, इन अध्यायों की साहित्यिक संरचना। हम पहले ही इस सामग्री पर कुछ हद तक चर्चा कर चुके हैं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं पहले ही कुछ हद तक इस सारांश पर ध्यान दे चुका हूँ।

जॉन 3 को देखने का एक तरीका 3.1-15 में यीशु और निकोडेमस के बीच साक्षात्कार की कथा पर ध्यान देना होगा और उसके बाद 3:16-21 में संपादकीय टिप्पणी पर ध्यान देना होगा। तो, संपादक के अनुसार इस कहानी का नैतिक मूल रूप से यह होगा कि हे भगवान, मुझे खेद है कि मैं गलत स्लाइड देख रहा हूँ। हम सबसे पहले कालक्रम और धर्मशास्त्र को देख रहे हैं। तो, सबसे पहले सवाल यह होगा कि यीशु ने मंदिर को साफ़ किया, यह कब हुआ और दूसरा, उसने ऐसा क्यों किया?

तो, सवाल यह है कि यह कब होगा, क्या उन्होंने इसे अपने मंत्रालय के आरंभ में ही किया था जैसा कि यहां सिनॉटिक गॉस्पेल में वर्णित तरीके से भिन्न तरीके से चित्रित किया गया है या उन्होंने इसे अपने मंत्रालय के अंत में किया था जैसा कि सिनॉटिक गॉस्पेल में है? तो क्या उसने इसे पहले दोनों बार किया, जैसा कि जॉन में बाद में और बाद में सिनोप्टिक्स में या क्या उसने इसे केवल एक बार किया, यदि उसने इसे केवल एक बार किया तो या तो जॉन इसे जल्दी रखकर एक विषयगत बिंदु बनाने के लिए ऐतिहासिक कालक्रम को पुनर्व्यवस्थित कर रहा है या सिनोप्टिक्स ने ऐसा किया है। मुझे लगता है कि अधिकांश लोग इंजील दृष्टिकोण से भी यह निष्कर्ष निकालेंगे कि यीशु ने संभवतः अपने मंत्रालय के दौरान केवल एक बार मंदिर को साफ किया था और उन्होंने अंत में ऐसा किया था और जैसा कि जॉन ने सामग्री रखने के अपने तरीके को ध्यान में रखते हुए अपने सुसमाचार में इसे आगे बढ़ाया है। यीशु ने यरूशलेम की ये सभी बार-बार यात्राएँ कीं, जिससे हमें पता चला कि यीशु को अपने मंत्रालय के आरंभ से ही यरूशलेम में यहूदी नेतृत्व के साथ कठिनाइयाँ थीं और जॉन अध्याय 12 में उनके अंतिम समय तक तनाव धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

इसलिए, मैं यह निष्कर्ष निकालूंगा कि उन्होंने अपने मंत्रालय के अंत में केवल एक बार मंदिर को साफ किया। तो उसने मंदिर क्यों साफ़ किया? ऐसे लोग हैं जो सिखाते हैं कि यीशु केवल इसे साफ़ करने के लिए वहां थे कि जो कुछ भी चल रहा था वह ठीक था, इसे केवल पुनरुद्धार की आवश्यकता थी और जो लोग ये काम कर रहे थे उन्हें और अधिक ईमानदार होने के लिए और अधिक आध्यात्मिक बनाना था और इसलिए वह बस थे इसे थोड़ा सीधा करने का प्रयास करते हुए वहां एक छोटा सा सुधार आंदोलन खड़ा किया जा रहा है। दूसरी ओर, आपके पास ऐसे विद्वान हैं जो सोचते हैं कि यीशु मंदिर के संपूर्ण विनाश को चित्रित करने के लिए वहां थे और मंदिर के मुद्रा परिवर्तकों और छोटी दुकानों को उखाड़ फेंकने के द्वारा वह उनसे कह रहे थे कि संक्षेप में रोमन क्या हैं, इसकी एक छोटी सी तस्वीर यहां दी गई है वे 70 ई. में थोड़ा सा कुछ करने जा रहे हैं, वे पूरी संरचना को ध्वस्त करने जा रहे हैं।

मुझे लगता है कि उनमें से पहला दृश्य थोड़ा अधिक हल्का है और दूसरा दृश्य थोड़ा अधिक भारी है। मुझे लगता है कि यीशु अंततः ईश्वर के लोगों को शुद्ध करने और लोगों के साथ ईश्वर की उपस्थिति को नवीनीकृत करने के बारे में हैं। इसलिए, जब हम यहां शुरुआत में संकेत देखते हैं कि यीशु अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहे थे जब उन्होंने कहा था कि इस मंदिर को कैसे नष्ट किया जाए और तीन दिनों में मैं इसे फिर से खड़ा करूंगा, और जब उन्होंने बाद में हमारे अगले अध्याय में बात की थी सामरिया के कुएँ के पास की स्त्री से यह कहकर कि परमेश्वर जिस स्थान की खोज में है वह वह स्थान नहीं है जहाँ तुम आराधना करते हो, बल्कि जिस रीति से तुम आराधना करते हो।

जब उसने उससे कहा कि यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि आप गेरिज़िम पर्वत पर पूजा करते हैं या यरूशलेम में, हालाँकि यरूशलेम वह स्थान रहा है क्योंकि भगवान यहूदियों का उद्धार है, वह कहता है कि वह समय आ रहा है और अब वह समय है जब लोग भगवान की पूजा करते हैं आत्मा में और सत्य में। तो, स्पष्ट रूप से मुद्रा परिवर्तकों को हटाकर मंदिर को शुद्ध करके, यीशु उस भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बयान दे रहे हैं जो उस प्रथा में घुस गया था जो अपने आप में एक आवश्यक अभ्यास था लेकिन जाहिर तौर पर अनैतिक रूप से किया जा रहा था। वह एक बयान

भी दे रहा है, मुझे लगता है कि भविष्य में क्या होगा, जहां हमें इस बात की चिंता नहीं होगी कि कोई व्यक्ति कहां पूजा करता है, क्या वे आत्मा और सच्चाई से भगवान की पूजा करते हैं।

हम अध्याय 3 पर पहुंचने से पहले जॉन अध्याय 2 में यह भी नोट करना चाहते हैं कि पुराने नियम में कुछ अलग-अलग संकेत हैं, यदि हमारे पास अधिक समय होता तो हम अधिक गहराई से देखने के लिए समय लेते, यह देखते हुए कि अध्याय 2 की आयत में कैसे 16 पिता के घर को बाजार में बदलने का संदर्भ है जो जकर्याह अध्याय 14 श्लोक 21 के संदर्भ में हो सकता है और श्लोक 17 में भी जो भजन 69 श्लोक 9 का संकेत प्रतीत होता है, तेरे घर का उत्साह मुझे खा जाएगा। ये अन्य पाठ हैं जिनके बारे में उनके अपने तात्कालिक संदर्भ में विचार करने की आवश्यकता है और फिर यह देखना होगा कि नए नियम में इन पाठों को कैसे पुनर्चक्रित या पुनः उपयोग किया जाता है, यह देखते हुए कि आगे के अध्ययन में दोनों पाठों के बीच समानताएं और अंतर कैसे सामने आएंगे लेकिन हम हमारे पास यह सब करने का समय नहीं है, अभी हम केवल पुस्तक का एक सिंहावलोकन देने का प्रयास कर रहे हैं, इसलिए हम इसे आप दर्शकों पर छोड़ देंगे कि आप आवश्यकतानुसार ऐसा करें। तो, फिर जॉन 3 की ओर बढ़ते हुए जहां मैं कुछ क्षण पहले आगे बढ़ रहा था, दुर्भाग्य से इसके लिए खेद है कि अब हम वास्तव में वहां हैं जब हम इस अध्याय को पढ़ते हैं तो हमें आश्चर्य होता है कि लाल अक्षरों को कहां रुकना चाहिए, दूसरे शब्दों में स्वयं यीशु के शब्द कहां समाप्त होते हैं वर्णन और यीशु के शब्दों पर वर्णनकर्ता की टिप्पणियाँ कहाँ से शुरू होती हैं।

एक सामान्य दृष्टिकोण जो मुझे लगता है कि काफी अर्थपूर्ण है, वह है अध्याय 3 श्लोक 1 से 15 तक यीशु और निकोडेमस के साथ बातचीत के रूप में देखना और फिर श्लोक 16 से 21 को संपादकीय टिप्पणी के रूप में देखना। तब जॉन यह कह रहा है कि जॉन द बैपटिस्ट नहीं बल्कि जॉन द इंजीलवादी, पुस्तक का लेखक, वह इस तथ्य पर जोर दे रहा है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है, वह मानवता में विश्वास लाने के लिए आया है और निर्णय उन लोगों पर है जिन्होंने पहले से ही विश्वास नहीं किया है। तो, यह एक उदाहरण होगा जिसे कभी-कभी जॉन में एहसास युगांतशास्त्र कहा जाता है।

विश्वास और निर्णय कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो समय के अंत में अंतिम निर्णय के रूप में सामने आ जाएगी, जीवन और मृत्यु, विश्वास और अविश्वास, मुक्ति और निर्णय कुछ ऐसी चीज़ है जो यीशु की उपस्थिति के साथ इतिहास में पहले से ही दिखना शुरू हो गई है। तो, जिस व्यक्ति ने यीशु पर विश्वास नहीं किया है वह पहले से ही इस सामग्री के अनुसार दोषी ठहराया गया है। तो, हमारे पास कथा है और फिर उस पर संपादकीय टिप्पणी है।

अध्याय के दूसरे भाग में भी यही बात जॉन और उत्पीड़न के विवाद के बारे में है, जिसके बारे में जॉन से पूछा गया था, जिसके कारण उसकी टिप्पणियाँ सामने आती हैं कि वह एक नहीं है, बल्कि कमांड में दूसरा है, इसलिए बोलने वाला वह है जो इंगित कर रहा है। यीशु के लिए, स्वयं को प्राथमिकता नहीं। तो, जॉन और शुद्धिकरण और यीशु की तुलना में जॉन की सापेक्ष स्थिति के बारे में यह चर्चा श्लोक 31 से 36 की संपादकीय टिप्पणियों की ओर ले जाती है, अंततः यीशु ही वह व्यक्ति है जिस पर ईश्वर ने आत्मा भेजी है, आत्मा यीशु पर बनी रहती है और यीशु ही वह है जिन्हें हमें ध्यान से देखने की जरूरत है। तो, हम इस अंतर्निहित त्रिनेत्रीय धर्मशास्त्र को जॉन अध्याय 3

में देखते हैं जहां पिता यीशु को आत्मा के साथ असीमित क्षमता से सुसज्जित करता है और यीशु पवित्र आत्मा द्वारा सक्षम किया गया पिता का एजेंट है।

तो, जॉन 3:1 से 21 तक का प्रवाह, फिर इसे अध्याय के पहले भाग के बारे में थोड़ा और विस्तार से तोड़ने के लिए हमने अभी 3:1 से 21 को देखा है जिसमें 3:1 से 15 तक की बातचीत शामिल है। और 3:16 से 21 तक संपादकीय टिप्पणी। आइए वापस जाएं और उस अनुभाग को स्वयं देखें। हमारे पास निकुदेमुस और यीशु के बीच तीन प्रकार के आदान-प्रदान हैं।

सबसे पहले, निकोडेमस अंदर आता है और कहता है कि हम जानते हैं कि आप एक शिक्षक हैं और भगवान से आए हैं। ठीक है, इतना कुछ इतना सच कहा गया जितना उसे पता था कि वह सही बोल रहा था, लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि वह हल्की प्रशंसा के साथ यीशु की निंदा कर रहा था। इसलिए, यीशु ने यह भी स्वीकार नहीं किया कि निकुदेमुस ने कहा है कि वह ईश्वर की ओर से आया शिक्षक है।

यीशु ने उससे कहा कि जब तक तुम नया जन्म नहीं लेते तब तक तुम परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकते। तो यीशु की पहचान के बारे में शुरूआती गलतफ़हमी से अगली समस्या पैदा होती है जो यह है कि दोबारा जन्म लेने के बारे में यीशु की टिप्पणियाँ निकोडेमस द्वारा समझ में नहीं आती हैं। इसलिए, निकोडेमस पूरी तरह से नहीं समझता है कि यीशु कौन है और दूसरा निकोडेमस निश्चित रूप से यह नहीं समझता है कि यीशु का क्या मतलब था जब वह कहता है कि फिर से जन्म लो।

तो, पद 4 में निकोडेमस कहता है कि जब आप बूढ़े हो जाते हैं तो आप कैसे पैदा हो सकते हैं? निश्चित रूप से, वे जन्म लेने के लिए अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश नहीं कर सकते। इसलिए, निकोडेमस को यह समझने में कठिनाई हो रही है कि यीशु का नए जन्म से क्या मतलब था। तो, यीशु पद 5 में उत्तर देते हैं कि कोई भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वे आत्मा में पानी से पैदा न हों।

तो, यीशु अब थोड़ा समझा रहे हैं कि आत्मा में पानी से पैदा होने के रूप में फिर से जन्म लेने से उनका क्या मतलब है। मांस मांस को जन्म देता है आत्मा आत्मा को जन्म देती है। आपको मेरे यह कहने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आपको दोबारा जन्म लेना होगा।

हवा जिधर चलती है उधर चलती है। आपको इसकी ध्वनि सुनाई देती है। आप यह नहीं बता सकते कि यह कहाँ से आता है या कहाँ जा रहा है।

ऐसा ही हर कोई है जो आत्मा से पैदा हुआ है। इसलिए, यीशु ने पानी और आत्मा को ईश्वर से नवीनीकरण के साथ जोड़ा है और निकोडेमस को इससे समस्या है। उसे वह समझ नहीं आता।

तो, तीसरा आदान-प्रदान श्लोक 9 में शुरू होता है जब निकोडेमस बस कहता है कि यह कैसे हो सकता है? वह यहां बिल्कुल भी यीशु के साथ ट्रैकिंग नहीं कर रहा है। तो, यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा कि इस्राएल के शिक्षक के रूप में तुम्हें यह जानना चाहिए। आपकी ज़िम्मेदारी है कि

आप परमेश्वर के लोगों की देखभाल करें और उन्हें सच्चाई सिखाएँ और यीशु यहाँ निकुदेमुस से स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि आप काम नहीं कर रहे हैं।

तो, यीशु ने निकुदेमुस से इन पंक्तियों के साथ इसे जारी रखा यदि आपको यह समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या कह रहा हूँ जब मैं इन सांसारिक चीजों के बारे में बोलता हूँ जैसे जन्म लेना, पानी जैसे शब्दों के बारे में बोलना, तो आपको स्वर्गीय चीजें कैसे मिलेंगी? और कोई भी कभी भी स्वर्ग में नहीं गया है सिवाय उसके जो स्वर्ग से आया था जो कि यीशु होगा। यीशु के पूर्व-अस्तित्व का उल्लेख सबसे पहले प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से सिखाया गया है और जैसे मूसा ने जंगल में साँप को उठाया था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को पुराने नियम की एक घटना की ओर इशारा करते हुए ऊपर उठाया जाना चाहिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि निकोडेमुस को कुछ जानकारी थी। यह कहते हुए समाप्त करें कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसे अनन्त जीवन मिलेगा।

यह नए जन्म के बारे में निकोडेमुस के प्रश्न का अंतिम उत्तर होगा। नये जन्म के बारे में आप क्या बात कर रहे हैं? यीशु नये जन्म के बारे में बात कर रहे हैं कि जो कोई भी उन पर विश्वास करता है उसे अनन्त जीवन मिले। तो, जाहिर तौर पर यहीं पर यीशु और निकोडेमुस के बीच की कहानी समाप्त होती है।

जहाँ तक हम जानते हैं निकुदेमुस उतना ही भ्रमित है जितना वह तब था जब वह आया था, शायद उससे भी अधिक। उसने सोचा कि वह कुछ हद तक यीशु को समझता है और यीशु से कही गई प्रत्येक बात उसे समस्याओं और गलतफहमियों में ही ले जाती थी। तो मुझे यकीन है कि उसने सोचा होगा कि उसने जाने की जहमत क्यों उठाई।

या शायद नहीं। शायद निकुदेमुस के हृदय में आत्मा पहले से ही काम करने लगी थी। उसे इन चीजों की झलक मिलने लगी थी और वह यीशु के बारे में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर रहा था।

एक जो उन्हें वह कहने के लिए प्रेरित करेगा जो उन्होंने जॉन अध्याय 7 में महासभा की बैठक में कहा था जिसे हम अंततः वीडियो की इस श्रृंखला में देखेंगे। अब हम उन व्याख्यात्मक प्रश्नों की ओर बढ़ते हैं जिन पर हमें यहां जॉन 3 में थोड़ा ध्यान देने की आवश्यकता है। सबसे पहले, पानी और आत्मा से पैदा होने का क्या मतलब है? मुझे पूरा यकीन नहीं है कि कई बाइबल विद्वान इसे निकोडेमुस की तुलना में बेहतर समझते हैं, जब पाठ मूल रूप से बनाया गया था। ऐसे लोग हैं जो हमें सिखाते हैं कि यीशु का तात्पर्य यह था कि यह प्राकृतिक और आध्यात्मिक जन्म दोनों का संदर्भ है।

वे हमें बताते थे कि निकुदेमुस के लिए यीशु का मतलब यह था कि जैसे आप शारीरिक रूप से पैदा हुए थे, वैसे ही आपको आध्यात्मिक रूप से भी जन्म लेने की ज़रूरत है। पानी प्राकृतिक जन्म को संदर्भित करता है, एमनियोटिक द्रव का टूटना, जैसा कि आप अक्सर जन्म की कहानियों के बारे में सुनते हैं, और फिर आत्मा द्वारा जन्म होता है। मुझे लगता है कि इस स्पष्टीकरण के साथ समस्या यह है कि पानी से पैदा हुई अभिव्यक्ति प्राचीन स्रोतों में एक अभिव्यक्ति नहीं है जो प्राकृतिक शारीरिक जन्म को संदर्भित करती है जहां तक मुझे पता है।

मुझे नहीं लगता कि उस समय इस अभिव्यक्ति का वास्तव में कोई मतलब था। तथ्य यह है कि हम एक महिला के पानी टूटने की बात कर रहे हैं क्योंकि वह बच्चे को जन्म देने के बहुत करीब है, इसे इस पाठ में वापस नहीं पढ़ा जाना चाहिए। आरंभ करने के लिए यह एक काफी सहज व्याख्या है।

मुझे लगता है कि कुछ लोग इसे टॉटोलॉजी कहेंगे। हर कोई जानता है कि दोबारा जन्म लेने के लिए आपको एक बार जन्म लेना होगा। वह कैसी शिक्षा होगी जिसे निकुदेमुस नहीं समझ सका? मैं वह दृष्टिकोण नहीं रखना चाहता।

मुझे लगता है कि आप आमतौर पर यही सुनते हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह इसी बारे में है। अन्य लोग इसे जल बपतिस्मा और ईसाई बपतिस्मा से जोड़ते हैं। इसके साथ समस्या यह है कि यह बहुत कालानुक्रमिक है।

स्पष्ट रूप से, इज़राइल के शिक्षक के रूप में यीशु द्वारा निकोडेमस से ईसाई बपतिस्मा के बारे में जानने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। निकोडेमस से यीशु को यह जानने की उम्मीद थी कि बाइबिल के यहूदी धर्म में अनुष्ठान शुद्धिकरण में पानी का उपयोग कैसे किया जाता है। वह निश्चित रूप से दूसरे मंदिर यहूदी धर्म और अनुष्ठान शुद्धता के लिए बाइबिल में जोड़े गए विभिन्न रीति-रिवाजों और परंपराओं से बहुत परिचित रहा होगा।

एक फरीसी के रूप में, उसने शायद पुरोहिती शुद्धता के बारे में पुराने नियम की कई परंपराओं को अपनाया होगा और उन्हें एक फरीसी के रूप में खुद पर लागू किया होगा, और शायद भोजन से पहले अतिरिक्त धुलाई की सीमा तक भी जैसा कि मैथ्यू अध्याय 15 में बताया गया है। निकोडेमस ने ऐसा किया होगा। जल अनुष्ठानों और पवित्रता के बारे में बहुत कुछ जाना जाता है, और कम से कम अनुष्ठानिक पवित्रता के बारे में, क्या उन्होंने पाप से नैतिक उल्लंघन से वास्तविक शुद्धिकरण के संदर्भ में इसके बारे में सोचा था, शायद यह एक और सवाल है। तो, ईसाई जल बपतिस्मा नहीं, बल्कि शायद यीशु उसे पानी की सफाई के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहे थे, विशेष रूप से जॉन की सफाई के बारे में, क्योंकि जॉन बैपटिस्ट लोगों को मसीहा से मिलने के लिए तैयार करने के लिए पानी में बपतिस्मा दे रहा था।

शायद इस अभिव्यक्ति में उसका थोड़ा सा अंश है। लेकिन शायद हम इसे थोड़ा बहुत सीमित कर रहे हैं, और हमें पुराने नियम के कुछ अंशों के प्रकाश में जल शोधन और जल शुद्धिकरण के बारे में सोचना चाहिए जो विस्तार से बात करते हैं और आत्मा में पानी को इज़राइल को शुद्ध करने में भगवान के युगांतिक कार्य के साथ जोड़ते हैं। इसलिए, हम सबसे पहले यशायाह 44, श्लोक 3 से 5 जैसे पाठ को देखते हैं। मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊंगा।

मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरे वंश पर अपनी आशीष उण्डेलूंगा। यह पहली बार लालिमा को एक काव्यात्मक समानता की तरह दिखता है, प्यासी भूमि पर पानी डालना, तुम्हारी संतानों पर मेरी आत्मा, सूखी भूमि पर धाराएँ, तुम्हारे वंशजों पर मेरा आशीर्वाद। ऐसा लगता है कि वहां काफी अच्छी तरह से मेल खाता है।

इसलिए, पानी डालना परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के युगांतिक नवीनीकरण का वर्णन करने का एक तरीका है, और फिर शेष पाठ उसके परिणामों का वर्णन करता है। लोग घास के मैदान में घास की तरह उगेंगे। यहां उपमा पर ध्यान दें, घास के मैदान में घास की तरह, चिनार के पेड़ों की तरह।

कोई कहेगा, मैं प्रभु का हूं। दूसरा स्वयं को जैकब के नाम से पुकारेगा। दूसरा अपने हाथ पर प्रभु का लिखेगा, और इस्राएल का नाम लेगा।

एक समान पाठ ईजेकील 36 है, शायद वह उस बिंदु से भी अधिक है जो यीशु शायद निकुदेमुस से कह रहे थे। इस्राएल से परमेश्वर की प्रतिज्ञा यह है, कि मैं तुम को सब देशों से इकट्ठा करूंगा, और तुम्हारे निज देश में लौटा ले आऊंगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे।

यह समझ आता है। मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और सभी मूर्तियों से शुद्ध कर दूंगा। ये रहा।

मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और तुम में एक नई आत्मा डालूंगा। मैं तुम में से तुम्हारा पत्थर का हृदय निकाल दूंगा, तुम्हें मांस का हृदय दूंगा, और मैं तुम्हें अपनी आत्मा दूंगा। न केवल आपको जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण या एक नया दृष्टिकोण, एक नई भावना देगा, बल्कि यह उससे कहीं अधिक क्रांतिकारी चीज़ होगी।

मैं तुम में अपनी आत्मा डालूंगा, और तुम्हें मेरी विधियों का पालन करने और मेरे नियमों का पालन करने में चौकसी करने को प्रेरित करूंगा। यदि यह भविष्यवाणी की परंपरा है जिसका जिक्र यीशु कर रहे हैं, तो वह आश्चर्यचकित हैं कि निकोडेमस में जॉन बैपटिस्ट और यीशु के स्वयं के मंत्रालय के साथ भविष्य में इज़राइल को शुद्ध करने वाले ईश्वर के बारे में इन भविष्यसूचक शब्दों के साथ जो कुछ भी हो रहा है उसे जोड़ने की आध्यात्मिक संवेदनशीलता नहीं है। . इसलिए, जब यीशु पानी और आत्मा के माध्यम से फिर से जन्म लेने के बारे में बात करते हैं, तो उन्होंने निकोडेमस से अपेक्षा की होगी कि वह इसे इस तरह के एक पाठ के साथ जोड़ दें, जो पानी के अनुष्ठान को जोड़ता है और इसे अंदर से बाहर तक आध्यात्मिक नवीनीकरण का वर्णन करने के लिए एक रूपक के रूप में उपयोग करता है। किसी का दिल बदलना, किसी व्यक्ति में एक नई भावना डालना, यहां तक कि मैं अपनी आत्मा आप में डालूंगा।

तो, मेरी राय में, यह इस विचार से अधिक समझ में आता है कि भगवान क्या कह रहे थे, यीशु निकुदेमुस से क्या कह रहे थे, बजाय इस विचार के कि वह सिर्फ बपतिस्मा के बारे में बोल रहे थे या वह सिर्फ आध्यात्मिक जन्म के बारे में बोल रहे थे। मेरे लिए यह बहुत अधिक मायने रखता है। तो, पानी और आत्मा से पैदा होना, शायद इसका अनुवाद करने का एक तरीका पानी से पैदा होने जैसा होगा, यानी आत्मा से पैदा होना, यहाँ तक कि आत्मा को भी पानी देना।

तो, दो शब्द शब्द से जुड़े हुए हैं और दो अलग-अलग इकाइयां नहीं हैं, लेकिन पहला दूसरे का संदर्भ है। ये दोनों मूलतः एक ही बात को कहने के दो तरीके हैं। अध्याय के अंत में जॉन 3 में एक और आकस्मिक प्रश्न यहां ईसाई संबंधी चिंताओं के लिए महत्वपूर्ण है, और वह यह है कि आत्मा

को बिना किसी सीमा के कौन दे रहा है? हमने पहले ही पाठ को पढ़ते हुए यूहन्ना 3, पद 34 में पहले ही नोट कर लिया था कि जिसे ईश्वर ने भेजा है वह ईश्वर के शब्द बोलता है, क्योंकि ईश्वर बिना किसी सीमा के आत्मा देता है, यह एक व्याख्यात्मक अनुवाद है क्योंकि यह केवल इतना कहता है कि वह आत्मा देता है सीमा के बिना।

इसका संभवतः अर्थ यह है कि ईश्वर यीशु को बिना किसी सीमा के आत्मा देता है। इसे अध्याय 1 में जोड़ा जाएगा जहां जॉन बैपटिस्ट यीशु के बारे में बात कर रहा है, और जॉन बैपटिस्ट कहता है, जिस आदमी पर आप आत्मा को उतरते हुए देखते हैं, कीवर्ड, और बने रहना, और बने रहना वही है जो पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देगा . तो, तथ्य यह है कि आत्मा यीशु के पास रहने के लिए आती है, न कि आती है और चली जाती है, शायद यह उससे संबंधित है जो हमें यहां 3.34 में कहा जा रहा है, भगवान आत्मा को बिना किसी सीमा के देता है।

यदि ऐसा मामला है, तो श्लोक 34 उस बात का एक विशिष्ट उदाहरण होगा जो श्लोक 35 कहता है। परमेश्वर यीशु को असीमित आत्मा देता है। पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसने सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, विशेष रूप से, पिता यीशु को आत्मा देता है। अधिक व्यापक रूप से, श्लोक 35 में, पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसने सब कुछ उसके हाथों में सौंप दिया है। तो मुझे लगता है कि जॉन 3.34 में यह पाठ उस तरीके की बात करता है जिसमें पिता यीशु को आत्मा प्रदान करता है और उन्हें जॉन 6 जैसे बाद के ग्रंथों में जोड़ता है जहां यीशु कहते हैं, मेरे शब्द आत्मा हैं और वे जीवन हैं।

और यूहन्ना 7 में जहां वह अपने शिष्यों पर आत्मा के आने की बात करता है, उसमें से जीवन के जल की नदियाँ बहती हैं। जाहिर है, यह जॉन 14 से 16 के बारे में हमारी समझ के लिए रास्ता तैयार करता है जहां हमारे पास कई पाठ हैं जो दिलासा देने वाले, समर्थक और सहायक के बारे में बात करते हैं जो यीशु के चरणबद्ध होने और क्रूस पर चढ़ाए जाने और पिता के पास लौटने के समय आ रहे हैं। वह शिष्यों को सहायता के बिना नहीं छोड़ते।

चूंकि उसने पिता से आत्मा प्राप्त की है, वह स्वर्ग में चढ़ते समय शिष्यों को आत्मा देता है। यह वही है जो उन्होंने अध्याय 20, श्लोक 22 में कहा था, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए भेजता हूँ। जैसे ही हम जॉन 3 और धार्मिक चिंताओं के संबंध के बारे में सोचते हैं, हम ट्रिनिटी के सिद्धांत के बारे में फिर से सोचते हैं, इतना नहीं कि धर्मशास्त्री जॉन 1 में इसके ऑन्टोलॉजिकल या आध्यात्मिक चरित्र को क्या कह सकते हैं कि यह शब्द कैसा हो सकता है ईश्वर के साथ और फिर भी ईश्वर बने रहें, लेकिन इस बात पर ध्यान दें कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में त्रिमूर्ति ने दुनिया में मुक्ति का कार्य कैसे पूरा किया है और हमें उनसे जुड़ने के लिए कैसे आमंत्रित किया गया है।

यीशु कहते हैं, जैसे पिता ने मुझे भेजा, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ। वह कैसे काम करता है? खैर, आइए कुछ बातों पर ध्यान दें कि किस तरह पिता यीशु को अपने एजेंट के रूप में भेजता है।

हमारे पास ग्रीक में क्रिया एपोस्टेलो है और हमारे पास ग्रीक में क्रिया पेम्पो है और इन दोनों शब्दों का उपयोग यीशु को भेजने वाले पिता का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

ध्यान दें कि आप देख सकते हैं कि इसका वर्णन करने के लिए वे कई बार आते हैं। तो, यीशु प्राचीन और आधुनिक दोनों समय में कानूनी शब्दावली में पिता का एजेंट है। यदि आप किसी को गोद लेने की प्रक्रिया या घर खरीदने या अपना स्वास्थ्य देखभाल मार्गदर्शक बनने या कुछ भी करने के लिए अपना एजेंट बनने के लिए अधिकृत करते हैं, तो वह व्यक्ति आपके लिए बोलने के लिए कानूनी रूप से अधिकृत है।

रब्बी की भाषा में, किसी व्यक्ति का शलियाच, एजेंट, भेजा गया व्यक्ति उस व्यक्ति के समान ही होता है। तो, यीशु तब पिता के एजेंट के रूप में आते हैं, जो पिता द्वारा पूरी तरह से सशक्त होते हैं। वह अपना काम नहीं कर रहा है।

वह पिता का कार्य कर रहा है, जो कार्य वह करने जा रहा है, जैसा कि वह यरूशलेम में अध्याय 5 में स्पष्ट करने जा रहा है, वह पिता के कार्य हैं, उसके अपने नहीं। तो, ऐसा मात्र नहीं है कि पिता यीशु को अपने एजेंट के रूप में भेजता है। पिता यीशु को सुसज्जित करने के लिए आत्मा भेजता है।

आत्मा यीशु पर आती है, 1.32.33, और उस पर बनी रहती है। पिता यीशु को बिना माप के या असीमित तरीके से आत्मा देता है। लेकिन जॉन के धर्मशास्त्र के बारे में दिलचस्प बात, और शायद एक कारण यह भी है कि क्लेमेंट जॉन को आध्यात्मिक सुसमाचार के रूप में संदर्भित करना चाहता था, क्योंकि यीशु को भेजी जा रही आत्मा की भाषा यहीं नहीं रुकती।

यीशु अपने चर्च को सुसज्जित करने के लिए आत्मा भेजता है। उसने निकुदेमुस से आत्मा से जन्म लेने की आवश्यकता के बारे में बात की। सामरिया की महिला ने उनकी इस टिप्पणी को जन्म दिया कि जो लोग ईश्वर की पूजा करते हैं उन्हें आत्मा और सच्चाई से उनकी पूजा कैसे करनी चाहिए।

मैं सोचता हूँ कि इसका मतलब सिर्फ अपने हृदय को परमेश्वर के सामने लाना और आत्मा में आराधना करना नहीं है। मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि आप भगवान की पूजा करते हैं क्योंकि भगवान की आत्मा ने आपकी आत्मा को भगवान के साथ चलने के लिए तैयार किया है। जॉन 6.63 में, जो शब्द मैं आपसे बोलता हूँ वे आत्मा हैं।

आत्मा यीशु से चर्च की ओर प्रवाहित होती है। फिर अध्याय 14, 15, और 16 में, यीशु के दूर जाने लेकिन चर्च में आत्मा भेजने, चर्च को यीशु ने जो कहा है उसे याद रखने में सक्षम बनाने, बारह प्रेरितों के माध्यम से चर्च को यीशु से नई चीजें सीखने में मदद करने का संदर्भ दिया गया है जो आत्मा प्राप्त करेंगे, और फिर अंततः उन पर श्वास लेते हुए और कहते हुए, उन्हें अपने एजेंट बनने के लिए तैयार करने के लिए आत्मा प्राप्त करें जैसे पिता ने मुझे पिता के एजेंट के रूप में भेजा था, इसलिए अब मैं आपको दुनिया में, दुनिया में अपने एजेंट के रूप में भेज रहा हूँ। अंत में, जैसे ही हम वीडियो समाप्त करते हैं, निकोडेमस हमारे सामने किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है? जाहिरा तौर पर, निकुदेमुस जॉन के सुसमाचार में उस तरह के लोगों का

प्रतिनिधित्व करता है जो अध्याय 2 में संकेतों की तलाश कर रहे थे। उन्होंने यीशु द्वारा किए गए कई काम देखे और कुछ अर्थों में, उन्होंने उस पर विश्वास किया।

वे उसके बारे में कुछ मानते थे। उन्हें विश्वास था कि वह संकेत कर सकता है। कदाचित वे नीकुदेमुस की बातों पर विश्वास करते थे।

वह ईश्वर की ओर से भेजे गए शिक्षक थे। परन्तु यीशु ने स्वयं को इन लोगों के प्रति समर्पित नहीं किया। वह जानता था कि उनमें क्या था, जो बाद में जॉन 6 में जिस तरह से काम करता है, उसके समान है। जैसा कि हम अध्याय 8 में और भी अधिक नाटकीय रूप से देखेंगे, जिस तरह से विश्वास शब्द का उपयोग वहां किया गया है।

शायद निकोडेमस वह व्यक्ति है जो हमें इस समय इज़राइल के अन्य नेताओं के दिमाग और दिल को देखने का एक तरीका देता है। क्योंकि जब यीशु अंदर आते हैं और मंदिर को साफ़ करते हैं, तो कम से कम, वह एक राजनीतिक कार्य करते हैं। वह कुछ ऐसा करता है जिससे वहां के प्रभारी लोग परेशान हो जाते हैं।

वह कुछ ऐसा कर रहा है जो उन्हें इसे साफ़ करने के लिए करना चाहिए था। तो, आपको आश्चर्य होगा कि आम तौर पर धार्मिक नेता इस पूरे समय यीशु के बारे में क्या सोच रहे थे। यह वास्तव में सामने आता है, मुझे लगता है, अध्याय 7 में जहां इज़राइल के नेताओं का उल्लेख किया गया है कि वे सोचते थे कि यीशु मसीहा नहीं हो सकते थे क्योंकि उन्हें नहीं लगता कि गलील से आने वाला कोई भी व्यक्ति मसीहा हो सकता है।

वे यह नहीं सोचते कि उसके पास मसीहाई होने के लिए आवश्यक योग्यताएँ हैं। फिर भी श्लोक 50 से 52 में उसके बारे में उनकी बहस के दौरान, निकोडेमस ने उन्हें याद दिलाया कि क्या कानून हमें नहीं बताता है कि हमें उसकी निंदा करने से पहले कम से कम यह पता लगाना चाहिए कि उसे अपने लिए क्या कहना है। हमें आश्चर्य है कि क्या निकोडेमस भी उस व्यक्ति से संबंधित होगा जिसे वह अंततः 19 के भीतर जोड़ता है जब यीशु को दफनाने का समय आता है।

यूहन्ना अध्याय 12 शोकपूर्वक इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि बहुत से गुप्त विश्वासी थे। हम उन्हें ऐसा कहते हैं, ये बिल्कुल पाठ के शब्द नहीं हैं। वे विश्वासी जो यीशु को समझते थे और शब्द के कुछ अर्थों में उन पर विश्वास करते थे, उनका अनुसरण करने के लिए सार्वजनिक प्रतिबद्धता की कीमत चुकाने को तैयार नहीं थे।

इसमें कहा गया है कि 1242 में वे आराधनालय में अपनी स्थिति को लेकर चिंतित थे। अध्याय 19 श्लोक 38 में, यह अरिमथिया के जोसेफ के साथ-साथ निकोडेमस को भी संदर्भित करता है जैसे कि यीशु के शरीर को दफनाना, पीलातुस से शरीर प्राप्त करना, और पीलातुस से यीशु के शरीर को दफनाने की अनुमति देना। कोई यह सोचेगा कि उस सार्वजनिक कार्य के द्वारा, वे उस समय यीशु के अनुयायियों के रूप में अपना पर्दाफ़ाश कर रहे होंगे या कम से कम वे लाशों की देखभाल करने वाले अच्छे यहूदी रहे होंगे।

यह दूसरे मंदिर यहूदी धर्म में एक बड़ी बात थी, विशेष रूप से अपोकलिफ़ल पुस्तकों में से एक में, जिसका शब्द इस समय मुझे बचता है। मैं इसे लेकर आऊंगा और आपको बाद में बताऊंगा। इसलिए, वे इसके बारे में चिंतित थे, और किसी भी मायने में उनकी आध्यात्मिकता ने उन्हें कर्तव्यनिष्ठ दूसरे मंदिर के यहूदियों के रूप में एक शरीर की देखभाल करने के लिए प्रेरित किया या यीशु के साथ उनका रिश्ता इतना मजबूत था जितना पहले किसी ने भी महसूस नहीं किया था।

वे उसके शरीर को दफनाना चाहते थे क्योंकि वे उस पर विश्वास करते थे। इसलिए, न केवल यहां बल्कि अध्याय 7 और अध्याय 19 के इन बाद के अंशों में भी निकोडेमस के चित्रण में थोड़ी अस्पष्टता है। ज्यादातर लोग मुझे लगता है कि निकोडेमस अंततः कम से कम 19 साल की उम्र तक यीशु में विश्वास करने वाला बन गया था।

लेकिन यहां जो प्रक्रिया चल रही थी उसे देखना दिलचस्प है। हम कह सकते हैं कि निकोडेमस और उसके जैसे अन्य लोग निश्चित रूप से इस बात को लेकर उत्सुक थे कि यीशु कौन थे। वह जो संकेत कर रहा था, उन्होंने निश्चित रूप से उनका ध्यान आकर्षित किया।

जिस तरह से उन्होंने पढ़ाया, और जिस तरह से उन्होंने बात की वह निश्चित रूप से आकर्षक था और उन्होंने उनका ध्यान आकर्षित किया। इस हद तक कि वे उत्सुक थे, हालांकि क्या उनकी जिज्ञासा इस बात तक आगे बढ़ी कि हम उनके विरोध के बावजूद उनके प्रति एक साहसी विश्वास कहेंगे या वे इतने डरपोक बने रहे कि उन्होंने उनके प्रति सार्वजनिक प्रतिबद्धता दिखाने के लिए कुछ भी नहीं किया? तो, मुझे लगता है कि निकोडेमस के बारे में जो महत्वपूर्ण प्रश्न हमसे संबंधित है, वह कुछ इसी तरह का होगा।

हमने यीशु के बारे में जानकारी देखी है जो हमारी जिज्ञासा को बढ़ाती है। हम उसके बारे में और जानना चाहते हैं। वह निश्चित रूप से एक शिक्षक है जो ईश्वर से आता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि निकुदेमुस सही था। मुझे लगता है कि प्रश्न यह होगा कि क्या हम केवल यीशु को खोज रहे हैं क्योंकि हम उसके बारे में उत्सुक हैं जैसे कि हम किसी प्राचीन व्यक्ति के बारे में हो सकते हैं जो प्रसिद्ध है और हम इस बात में रुचि रखते हैं कि उनका जीवन कैसा रहा होगा या उनके विचार क्या थे या हैं हम यीशु के पास ऐसे व्यक्ति के रूप में आ रहे हैं जो वह है और उससे भी कहीं अधिक, उससे भी कहीं अधिक। कोई ऐसा व्यक्ति जो हमें न केवल एक आकर्षक शिक्षण या दिलचस्प विचार प्रदान कर रहा है जो हमारी जिज्ञासा को बढ़ाता है, बल्कि कोई ऐसा व्यक्ति जो हमें किसी चीज़ के माध्यम से अंदर से बाहर बदलने की पेशकश कर रहा है जिसे वह नया जन्म कह रहा है।

यीशु यह नहीं चाहते कि हम बस उनके पास आएँ और कहें कि आप ईश्वर की ओर से आए शिक्षक हैं। यीशु चाहते हैं कि हम यह महसूस करते हुए उनके पास आएँ कि हमें एक नए जन्म से कम कुछ नहीं चाहिए। हमें अपने जीवन में ईश्वर की आत्मा की शक्ति और पुराने नियम में पानी द्वारा चित्रित शुद्धिकरण से कम कुछ नहीं चाहिए।

इसलिए, जब हम इस वीडियो को समाप्त करते हैं तो मैं आपको उस प्रश्न के साथ छोड़ता हूँ। क्या हम यहाँ केवल यीशु द्वारा सूचित होने के लिए हैं या हम पहले से ही अपने जीवन में उसकी आत्मा

के कार्य द्वारा परिवर्तित होने की प्रक्रिया में हैं? धन्यवाद।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 5 है, यरूशलेम में यीशु की प्रारंभिक सेवकाई। यूहन्ना 2:13-3:36.